

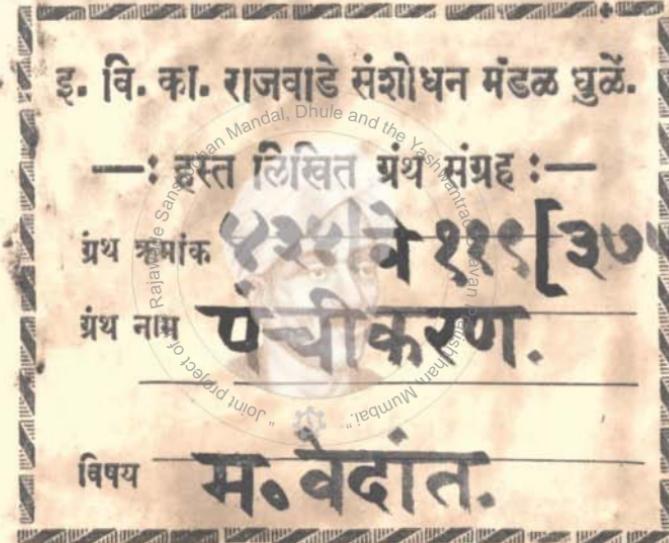
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—ः हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ श्रमांक ५३८ बे १९९ [३७४]
ग्रंथ नाम चंचीकरण.

विषय

म० वेदांत.



व्योदा वस्त्रं ॥१॥
 ॥ इदं व्रह्म ॥२॥
 ॥ अमित का लकड़े
 ॥ व ब्रह्म ॥३॥
 ॥ सुवं बस्त्र ॥४॥
 ॥ देवन्य ब्रह्म ॥५॥
 ॥ साक्ष ब्रह्म ॥६॥
 ॥ सता ब्रह्म ॥७॥
 ॥ सगुण ब्रह्म ॥८॥
 ॥ नीचुण ब्रह्म ॥९॥
 ॥ अनन्द ब्रह्म ॥१०॥
 ॥ वा व्य ब्रह्म ॥११॥
 ॥ अनुभव ब्रह्म ॥१२॥
 ॥ ददा का वर ब्रह्म ॥१३॥
 ॥ अनुवा व्य ब्रह्म ॥१४॥

॥ आकाश नीत
 ॥ विद्युत वर्ण ब्रह्म ॥१॥
 ॥ मठा वर्ण रात्रि ॥२॥
 ॥ उचिता का रात्रि ॥३॥
 ॥ मदी हेकरा ॥४॥
 ॥ व्य पवरा ॥५॥
 ॥ विद्युत व्यापक
 ॥ माटि व्यापक
 ॥ ब्रह्मा तिव्यापक
 ॥ अनिरोपातिव्यापक
 ॥ व्यपक ॥६॥
 ॥ पुरुषार्थ ॥ गुरुद्वा ॥
 ॥ धूमी ॥७॥ ॥ सदृश
 ॥ अधी ॥८॥ ॥ रजोगण
 ॥ कामा ॥९॥ ॥ लम्बागण
 ॥ लाहा ॥१०॥ ॥ ज्ञानदस ॥११॥
 ॥ लगय ॥१२॥

॥ छड़ा रपु ॥१॥
 ॥ दूस ॥२॥
 ॥ दूध ॥३॥
 ॥ मद ॥४॥
 ॥ मधरा ॥५॥
 ॥ दंभा ॥६॥
 ॥ अडवा ॥७॥
 ॥ इन ॥८॥
 ॥ जैमप ॥९॥
 ॥ च ॥१०॥

॥ मुकि वार ॥१॥
 सलै करावै नली विग
 छौके ॥ सामिपता देवासा
 मैबैसा वै ॥ रवरुपता
 देवता सह पाठुवौ ॥ सा
 यो ज्यटानिरुणमिकुने
 ॥ ओरावाचा रहने
 रक्त

॥ जावे हमा ॥
 ॥ राहु अवकाहा चा ॥
 ॥ खड़ा नायु चा ॥
 ॥ इडविन चा ॥
 ॥ उधरुपीवचा ॥
 ॥ रस अपाचा ॥
 ॥ पंचतख ॥
 ॥ छधिवि ॥ अप ॥ लेज
 ॥ ब्रह्मा ॥ नहु निष्टुप

॥ इडविन करा ॥ नायला ॥
 ॥ अस्ति यत्तो रा ॥
 ॥ विवर्ध येते ॥३॥
 ॥ विविन वृत्ते ॥४॥
 ॥ अपीष्मीते ॥५॥
 ॥ विन रायते ॥६॥
 ॥ कद ॥ इथा ॥ लदा

॥सत्यगणीविष्णु ॥ चर्चल ॥ २) ॥ शि ॥ ३)
॥ हतोषणीब्रह्म ॥ निष्ठल ॥ ना ॥ ४)
॥ लमा ॥ ० राक ॥ आवरोदा ॥ त्व ॥ ५)
॥ इन्द्रीय ॥ ७)
॥ इन्द्रानिव ॥ १)
॥ अहोनिव ॥ २)
॥ वासनाटक निव ॥ ३)
॥ देव्य निव ॥ ४)
॥ देवटा ॥ ५)
॥ प्रतीप्रादेव ॥ ६)
॥ अंतर्मात्राऽदेव ॥
॥ अवतारदेव ॥
॥ तिरंतनदेव ॥

॥ चर्चल ॥ १)
॥ निष्ठल ॥ २)
॥ आवरोदा ॥ ३)
॥ याचिष्ठप ॥
॥ नद्वासा ॥ ५)
॥ स्वलपष्ठप ॥
॥ उमधेष्ठ ॥ ७)
॥ विष्ठुरुप ॥ ८)
॥ इन्द्रानिव ॥ ९)
॥ किष्ठुरुलि ॥
॥ द्विष्ठुरुलि ॥
॥ विष्ठुरुलि ॥

॥४३॥^(३)
क्षुलदुर्विनसंगभिजसाधुसमागमा।
पुष्यमहारवसादनिसमनिकुला॥७॥

१ व्राण्डामा ॥ १८ ॥
२ भैरवामा ॥ १९ ॥
३ मध्यकाष्ठोरं ब्रह्मरा ॥
४ ब्रह्मरा ॥ परम्पराम
५ तन्मयब्रह्म ॥ २० ॥
६ अव्रह्म ॥ २१ ॥
७ लाक्ष्मीरा ॥ २२ ॥
८ सगुणब्रह्म ॥ २३ ॥
९ निरुणब्रह्म ॥ २४ ॥
१० अनन्दब्रह्म ॥ २५ ॥
११ वास्तवब्रह्म ॥ २६ ॥
१२ उभवब्रह्म ॥ २७ ॥
१३ विकारब्रह्म ॥ २८ ॥

॥ अ॒दि॑र्दि॑ष्टि॑ ॥ १४
॥ उ॒क्ति॑त्ति॑ ॥ १५
॥ का॑मा॑ ॥ १६
॥ व्री॑ता॑ ॥ १७
॥ मा॑ ॥ १८
॥ म॑ ॥ १९
॥ दा॑ ॥ २०
॥ मा॑ ॥ २१
॥ दा॑ ॥ २२
॥ अ॑ंका॑ ॥ २३
॥ रु॑नि॑ ॥ २४
॥ ग॑जंवा॑ ॥ २५

१८६

०३ विवरण ।
१४ अनुष्ठान ॥ १ ॥
आस्थे यतो ॥ २ ॥
विवरधर्मितो ॥ ३ ॥
प्रीतवलो ॥ ४ ॥
पितृतो ॥ ५ ॥
यतो ॥ ६ ॥

१ अकाहा चिह्नपो ॥
२ धटावेष ॥
३ मठावेष ॥
४ दीदावेष ॥
५ छ ॥ ६ हेमदीवेष ॥

१) व्यापक, २) दृष्टिव्यापक, ३) सृष्टिव्यापक, ४) गतिशीलव्यापक, ५) प्रदृष्टिव्यापक,

पुण्यपूर्णा ॥ १ ॥
नेत्रम् ॥ २ ॥ निष्ठा
॥ ३ ॥ भूमि ॥ ४ ॥ रक्षा
॥ ५ ॥ कृष्ण ॥ ६ ॥ देवी
सोऽथ ॥ ७ ॥ गीत ॥ ८ ॥

॥मृक्षिचाल
॥सलोकलोहवकार्य
॥रात्री। समिष्टलादे
॥समिक्षावे। स्वरुप
॥तोदेव स्वरुप पद्मा
॥सायोज्यतानिश्चिं
॥मिथुने॥ ओहारि मृ
॥की॥

॥ याचेहूप ॥
॥ हाकैहु अकारा चा ॥
पर्वत ॥ ॥ स्मृतियुच
॥ नम्नलोकाचा ॥
॥ गंधर्वभिति-
॥ सउपाचा ॥

॥पंचलता॥

पिवि॥ अप॥ लेज॥ यायु॥ आकर्षा॥

॥ या चिदैवले ॥

१०८ अनुवादम् ॥ इदं ॥ इत्यर्थः ॥ सदा ॥

१३५
प्रियगणीवद्यु ॥ रजेत्तुर्णीवंश्व ॥ लम्भोऽन्
ति व ॥ व ॥ व

॥ या चिह्नपा ॥ १०३

॥ या चिह्नपात्र

॥ अनन्तां साहित् ॥
॥ स्वरूपदेषु ॥

अहम् नाम दृष्टिः ॥२॥

१८० अंगुष्ठा ॥ अंगुष्ठा ॥ अंगुष्ठा ॥

यो जलवा ॥४॥ इति नारायण ॥५॥ अहम्

॥ वलार्या ॥ १२॥ अन्तर्या ॥ १३॥ १४॥
५८॥ सप्तमे ॥ १५॥ इति इति ॥ १६॥ विलङ्घन

१५३
प्राद्युम्ना अस्ति ॥१५३॥

1 अग्रदूता रवदू ? • निम्नधारा दुर्गा ॥
1 अग्रदूता रवदू ? दुर्गा ॥

अतरात्मासु ॥१३॥
विद्युत् ॥१४॥

॥ न द्वन्द्वे ॥ १८ ॥

॥ श्रीविद्याताप ॥३ ॥ अवान् ॥

३७५ यमवत् ॥ ११८ गायत्रीपूर्णा
गायत्रीपूर्णा ॥ ११९ हातिहातीगायत्री

अधिदेवकाम् ॥ श्रावणगृह्णता
सीजे च ॥

॥ लालागणे ॥ २ ॥

॥ अस्या चरा ॥ ४ ॥ स्वगनकं भागला ॥
सीता ॥ ५ ॥

१९०८ अगस्त २५

१० वास्ता ॥ २ ॥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ

ପକ୍ଷାମ୍ବା, କୁଣ୍ଡିଲେଖ

॥ पृष्ठा ॥

पुस्तकान् विद्यापूर्वा।

१ लंदनी।
२ अमेरिका।

१ असाध्य हो।
२ असम्भव हो।

अद्यतेषु त्रिपाला
उपराजनकामी



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com